JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व एवं संज्ञानात्मक शैली का अध्ययन

(Study of enthusiastic and non-enthusiastic personality and cognitive style of visually impaired students)

श्रीमती मनीषा वर्मा (शोधार्थी, हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग)

डॉ.शबनम खान (सहा. प्राध्यापक, सेंट थॉमस कॉलेज भिलाई, छ.ग.)

डॉ.कविता वर्मा (सहायक प्राध्यापक, कल्याण पी.जी.कॉलेज भिलाई, छ.ग.)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली पर प्रभाव का अध्ययन करना था। इस अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ के शासकीय एवं अनुदान प्राप्त विशिष्ट विद्यालय में अध्ययन करने वाले 150 (75 बालक + 75 बालिका) विद्यार्थियों का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन द्वारा किया गया। व्यक्तित्व के मापन हेतु महेश भार्गव द्वारा निर्मित आयामी व्यक्तित्व मापनी (संशोधित 2017) का व संज्ञानात्मक शैली के मापन हेतु शोधार्थी द्वारा स्व–निर्मित संज्ञानात्मक शैली मापनी (2022) का प्रयोग किया गया। सांख्यिकी विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं एक दिश प्रसरण विश्लेषण परीक्षण का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के परिणाम में उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली के आयाम क्षेत्र निर्भरता पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया जबकि संज्ञानात्मक शैली के आयाम क्षेत्र स्वतंत्रत एवं संज्ञानात्मक शैली पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

मुख्य शब्द – दृष्टिबाधित विद्यार्थी, संज्ञानात्मक शैली, आयामी व्यक्तित्व

परिचय

भारत विविधताओं का विशाल देश है जहा विश्व की 21.9% दृष्टिबाधित व्यक्ति जीवन निर्वाह करते है, 69% दृष्टिबाधित गाँवों में निवास करती है। अतः दृष्टिबाधितों को देश के विकास के मुख्य धारा से जोड़ना आवश्यक है। दृष्टिहीनता समाज में व्याप्त एक नकारात्मक सोंच है जो विकास को बाधित करती है, जिसे स्नेह, सहानुभूति, प्रेम, सहयोग, समुचित शिक्षण कौशल व उचित मार्गदर्शन द्वारा सकारात्मक सोंच में बदला जा सकता है। बालक के सीखने का प्रमुख माध्यम दृष्टि होती है, बालक 75% तक का ज्ञान दृष्टि द्वारा ही प्राप्त करता है। अतः दृष्टि की अक्षमता दृष्टिबाधितों की संज्ञान व व्यक्तित्व को प्रभावित कर सकती है। अभिभावकों की असमर्थता, कमजोरी, अशिक्षा दृष्टिबाधितों को भी कमजोर व असमर्थ बनाती है अर्थात दृष्टिबाधित बालकों के अभिभावकों में दृष्टिहीनता का कारण, निराकरण एवं शिक्षा के संदर्भ में जानकारी का अभाव और जागरूकता की कमी दृष्टिहीन बालकों उचित आयु सीमा में शिक्षा प्राप्त करने में बाधा उत्पन्न करती है। अतः इन बालकों को सही समय पर शैक्षिक संस्था में प्रवेश प्राप्त करने व शिक्षा प्राप्त करने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। सामर्थ्य व्यक्ति के मन एवं आत्मा में होती है जो अभ्यास और मेहनत द्वारा प्रस्फुटित होती है। अतः दृष्टिबाधित

बालकों की दृष्टि की अक्षमता उन्हे कोई कार्य करने से रोक नहीं सकती है। व्यक्तित्व, व्यक्ति का मनोदैहिक संगठन है जिस पर परिवेश कारक का प्रभाव पड़ता है। अतः दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए शिक्षा के समुचित अवसर निर्मित किया जा सकता है जहॉ उनके संज्ञानात्मक, अधिगम एवं सृजनात्मक शैली का अपूर्व विकास संभव है। इससे दृष्टिबाधित बालक भी देश के विकास में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करनें में सफल हो सकेंगे।

अबाउकेरीं, सी. एवं अन्य (2020) द्वारा प्रसिद्ध दृष्टिबाधित धावकों एवं सामान्य धावकों के मध्य व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन किया और बताया कि खेल की अवधि व्यक्तित्व लक्षण को प्रभावित करती है, किन्तु विकलांग एवं गैर विकलांग एथलिटों के व्यक्तित्व के बीच कोई अतंर नही पाया गया। रानी सोनू (2017) द्वारा विशेष आवश्यकता वाले बालकों के शैक्षणिक उपलब्धि, भावनात्मक बुद्धि एवं संज्ञानात्मक शैली का अध्ययन किया और पाया कि विशेष आवश्यकता वाले बालकों के संज्ञानात्मक शैली व भावनात्मक बुद्धि में सार्थक संबंध नहीं पाया गया, किंतु इन बच्चों के भावनात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में और संज्ञानात्मक शैली व शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक संबंध पाया गया। काँचीबहोतीय, डी. एवं अन्य (2021) ने दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक क्षमता के विकास में योग अभ्यास के प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि दृष्टिबाधित बालक एवं बालिकाओं के स्मरण एवं स्मृति क्षमता में योगाभ्यास के बाद सकारात्मक परिवर्तन पाया गया।

उद्देश्य

- दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली के आयाम क्षेत्र निर्भरता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली के आयाम क्षेत्र स्वतंत्र पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

H_{0-1} दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली के आयाम क्षेत्र निर्भरता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

H_{0-2} दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली के आयाम क्षेत्र स्वतंत्र पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

H_{0-3} दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

अध्ययन की परिसीमाएँ

- अध्ययन छत्तीसगढ़ स्टेट के अंतर्गत आने वाले दुर्ग, रायपुर, बिलासपुर, राजनांदगांव व धमतरी जिले के छात्रावास में रहकर अध्ययन करने वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों तक सीमित है।
- अध्ययन इकाइयों का चयन उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि द्वारा किया गया व अध्ययन 150 दृष्टिबाधित बालक व बालिकाओं तक सीमित है।

- प्रस्तुत अनुसंधान 16 वर्ष से 18 वर्ष तक के दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व एवं संज्ञानात्मक शैली के अध्ययन तक ही सीमित है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण विधि पर आधारित है।

जनसंख्या

सत्र 2020–21 के दौरान छत्तीसगढ़ राज्य के समाज कल्याण विभाग द्वारा प्राप्त आकड़ों के आधार पर अनुसंधानकर्ता द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य के 6 अनुदान प्राप्त छात्रावास (583) एवं 6 शासकीय संस्था (455) में रहकर अध्ययन करने वाले कुल 1038 दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

न्यादर्श

न्यादर्श का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है। अध्ययन हेतु 150 (75 बालक एवं 75 बालिका) दृ ष्टिबाधित विद्यार्थियों कों न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

उपकरण

आकड़ों के संकलन के लिए उपकरण के रूप में व्यक्तित्व के मापन हेतु महेश भार्गव द्वारा निर्मित आयामी व्यक्तित्व मापनी (संशोधित 2017) का प्रयोग किया गया हैं। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक शैली के मापन के लिए स्व–निर्मित उपकरण संज्ञानात्मक शैली मापनी (2022) का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय तकनीक मध्यमान, मानक विचलन एवं एक दिश प्रसरण विश्लेषण (ONE WAY ANOVA) का प्रयोग किया गया है ।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन "दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही– गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली पर प्रभाव का अध्ययन" के परिणाम निम्न है –

H_{0-1} दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली के आयाम क्षेत्र निर्भरता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

प्रस्तुत शोध में परिकल्पना की पुष्टि हेतु दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली के आयाम क्षेत्र निर्भरता पर प्रभाव का मापन करनें हेतु एक दिश प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। जिसे तालिका क्रमांक 1 में दर्शाया गया हैं।

तालिका क्रमांक – 1

उत्साही एवं गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली के आयाम क्षेत्र निर्भरता पर प्रभाव

व्यक्तित्व के आयाम	प्रसरण स्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता का अंश	मध्यमान वर्ग	F – मान
उत्साही – गैर उत्साही	समूहांतर वर्ग	173.963	1	173.963	2.520
	समूहांतर्गत वर्ग	10218.870	148	69.647	
	कुल	10392.833	149		

तालिका से स्पष्ट है कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व के लिए संज्ञानात्मक शैली के आयाम क्षेत्र निर्भरता का F–मान 2.520 है, जो 0.5 सार्थकता स्तर पर टेबल मान से कम हैं। अतः दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही– गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली के आयाम क्षेत्र निर्भरता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा। इस प्रकार परिकल्पना कि "दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली के आयाम क्षेत्र निर्भरता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा" स्वीकृत की जाती है। अतः उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की क्षेत्र निर्भरता संज्ञानात्मक शैली एक समान पाई गई।

H_{0-2} दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली के आयाम क्षेत्र स्वतंत्रता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा ।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि हेतु दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली के आयाम क्षेत्र स्वतंत्र पर प्रभाव का मापन करनें हेतु एक दिश प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। जिसे तालिका क्रमांक 2 में दर्शाया गया हैं।

तालिका क्रमांक 2

उत्साही– गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली के आयाम क्षेत्र स्वतंत्रता पर प्रभाव

व्यक्तित्व	प्रसरण स्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता का अंश	मध्यमान वर्ग	F – मान
उत्साही – गैर उत्साही	समूहांतर वर्ग	217.164	1	217.164	3.057
	समूहांतर्गत वर्ग	10514.810	148	67.802	
	कुल	10731.973	149		

तालिका क्रमांक 2 दर्शाता है कि, दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही– गैर उत्साही व्यक्तित्व के लिए संज्ञानात्मक शैली के आयाम क्षेत्र स्वतंत्र का F–मान 3.057 है, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर टेबल मान से कम हैं। अतः दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली के आयाम क्षेत्र स्वतंत्र पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। इस प्रकार परिकल्पना कि "दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली के आयाम क्षेत्र

स्वतंत्र पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा" स्वीकृत होती है। अतः उत्साही एवं गैर उत्साही व्यक्तित्व वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की क्षेत्र स्वतंत्र संज्ञानात्मक शैली एक समान पाई गई।

H_{0-3} दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

परिकल्पना की पुष्टि हेतु दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली पर प्रभाव का मापन करनें हेतु एक दिश प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। जिसे तालिका क्रमांक 3 में अंकित किया गया है।

तालिका क्रमांक 3

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली पर प्रभाव

व्यक्तित्व के आयाम	प्रसरण स्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता का अंश	मध्यमान वर्ग	F – मान
उत्साही – गैर उत्साही	समूहांतर वर्ग	1020.510	1	1020.51	4.627
	समूहांतर्गत वर्ग	32640.323	148	220.543	
	कुल	33660.833	149		

तालिका क्रमांक 3 से स्पष्ट है कि, दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व के लिए संज्ञानात्मक शैली का F–मान 4.627 है, जो 0.05 सार्थकता स्तर का टेबल मान से अधिक हैं। अतः दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली पर सार्थक प्रभाव पाया गया। इस प्रकार परिकल्पना कि "दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा" अस्वीकृत की जाती है।

पुनः यह जानने के लिए कि उत्साही व्यक्तित्व वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली अच्छी थी या गैर उतसाही व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की, उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली के प्राप्तांकों के मध्यमान एवं मानक विचलन की गणना की गई जिसका सांराश आरेख क्रमाक 1 पर अकिंत है।

आरेख क्रमांक 1

उत्साही– गैर उत्साही व्यक्तित्व वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक शैली के प्राप्तांक का मध्यमान एवं मानक विचलन

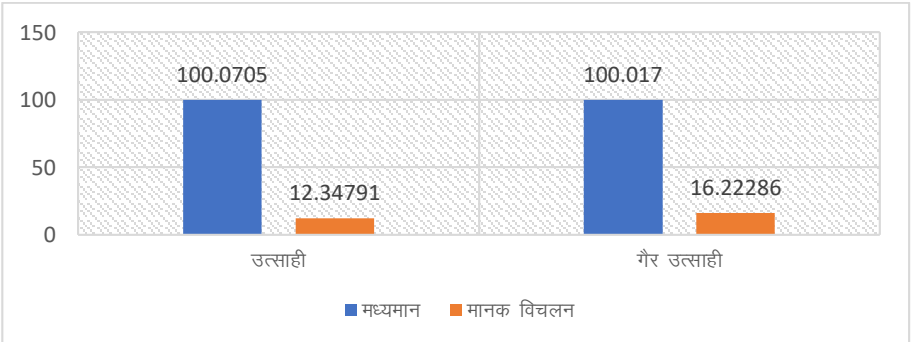

आरेख क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि, उत्साही व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली प्राप्तांकों का माध्यमान 100.0705 एवं मानक विचलन 12.34791 तथा गैर उत्साही व्यक्तित्व वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के संज्ञनात्मक शैली के प्राप्तांकों का मध्यमान 100.017 तथा मानक विचलन 16.22286 पाया गया। जो प्रदर्शित करता है कि, गैर उत्साही व्यक्तित्व वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अपेक्षा उत्साही व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली अधिक है।

निष्कर्ष

व्यक्तित्व, व्यक्ति के व्यवहार का समायोजित संगठन है जिसके अंतर्गत शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक प्रक्रियाएं सम्मिलित हैं, इसी प्रकार संज्ञानात्मक शैली व्यक्तित्व का ही एक भाग है जिसके अंतर्गत बालक अपने आस–पास के वातावरण से ज्ञान प्राप्त कर अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है।

वस्तुतः इन्ही अवधारणाओं के साथ शोध में यह जाननें का प्रयास किया गया कि क्या दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही एवं गैर उत्साही व्यक्तित्व पर संज्ञानात्मक शैली एवं इनके आयाम का प्रभाव पड़ता हैं? अथवा नहीं और इस क्रम में शोधकर्ता ने पाया कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के उत्साही–गैर उत्साही व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली व इनके आयाम पर प्रभाव पाया गया। जिसका उपयुक्त कारण हो सकता है कि उत्साही व्यक्तित्व वाले व्यक्ति ऊर्जा से परिपूर्ण उत्साही, सामाजिक, मिलनसार होतें हैं जो अपने आसपास के लोगों के साथ जुड़े रहना पसंद करते हैं और अपनी भावनाओं, रुचियों, इच्छाओं को बिना संकोच किए प्रकट करते हैं। इस प्रकार के व्यक्तित्व वाले व्यक्ति, अपनी जिज्ञासा एवं इच्छाओं को पूर्ण करने हेतु सक्रिय एवं सशक्त रहते हैं और अपने रुचि क्षेत्र के ज्ञान को ग्रहण करने का सफल प्रयास करते है।

Refrences

भटनागर एवं भटनागर (2011), "व्यक्तित्व", शिक्षण अधिगम का मनोविज्ञान, आर लाल बुक डिपो, 276–348.

गराईगार्डोंबिल,एम.एवं बर्टनार (2009), "सामान्य एवं दृष्टिबाधित बच्चों की आत्मअवधारणा, आत्मसम्मान अन्य व्यक्तित्व लक्षण और मनोचिकित्सा लक्षणों का विश्लेषण करना" स्पेनिश जनरल ऑफ साइकोलॉजी, 12 (1), 142–160.

पापाडोपॉल्स,एस. कौसटरिवा, इ.चारलंपिड़औ, एम.एवं गेरपोसटोलऔ,आई. (2013), "व्यक्तित्व लक्षण पर दृष्टिहिनता का प्रभाव" इंटरनेशनल जनरल ऑफ स्पेशल एजुकेशनल, 28 (3), 1–7.

पेट्रोविक, डी. एवं एसकिरोविक, एवी. (2010), "दृष्टिबाधित और विशेष शैक्षिक उपचार वाले बच्चों के संज्ञानात्मक विकास का अध्ययन" प्रोसीडिया सोशल एंड बिहेवियर साइंस 5 (1), 157–162.

रानी. सोनू (2017), "विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के संज्ञानात्मक शैली भावात्मक बुद्धि व शैक्षणिक बुद्धि के संबंध का अध्ययन" इंटरनेशनल जनरल ऑफ रिसर्च एन्ड रिव्यू, 2(9), 158–163.

सरकार, पी. (2015), "दृष्टिबाधित बच्चों के विज्ञान योग्यता पर उनके संज्ञान क्षमता एवं अधिगम शैली के प्रभाव का अध्ययन" सर्वे तीन, बनारस हिंदी विश्वविद्यालय वाराणसी भारत 154.

शर्मा, ए. (2011), "दृष्टि बाधित बालक" विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप, आर.लाल बुक डिपो मेरठ, 217–234.

वर्मा,एम. खान, एस. एवं वर्मा, के.(2023), "दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का संज्ञानात्मक शैली पर प्रभाव का अध्ययन" मुक्त शब्द जर्नल, 7(10), 445–452.